DAILY ASSAM

शब्द-विवेचन

1. शब्द

हम अपने विचारों को बोल कर या लिख कर व्यक्त करते हैं। सुबह से संध्या तक हम कितने ही वाक्य बोलते हैं, परंतु इन वाक्यों का मुख्य आधार शब्द है, क्योंकि शब्दों के मेल से ही वाक्य बनते हैं।

शब्दों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। हम जितने अधिक शब्द जानेंगे, उतना ही भाषा पर अधिकार कर सकेंगे। भाषा की लघुतम इकाई अक्षर है। जैसे—

म, अ, र, ख आदि इन्हीं अक्षरों के मेल से शब्द बनते हैं।

जैसे — मा, मारा, रामा, खारा आदि।

इसी प्रकार — तू, नगर, माँ, पर्वत, काम, कटहल।

ऊपर के उदाहरणों में तू, माँ, काम, नगर आदि ध्वनियों में मेल से बने हुए सार्थक इकाई हैं। भाषा की सार्थक इकाई को शब्द कहते हैं। जैसे —

त + ऊ = तू म्+ आँ = माँ

क् + आ + म = काम न + ग + र = नगर

टिप्पणी — ''जब इन शब्दों का व्यवहार वाक्य में होता है, तब वे पद कहलाते हैं।'' जैसे —

तू काम कर। तू नगर जा। तू माँ को बुला।

ऊपर के वाक्यों में तू, काम, कर, नगर, जा, माँ, बुला, आदि पद हैं।

अर्थात्, जब भाषा की सार्थक इकाई स्वतंत्र आती है तो शब्द है और जब वाक्य में व्याकरण के नियमों के साथ आती है तो पद।

जैसे —

1—	अक्षर	रा / म / आ / ओ 2 2 3 4
2 —	शब्द	राम / आओ 1 2
3 —	पद	राम / आओ 1 2

अभ्यास

1. इन ध्वनियों से शब्द बनाओ — रा स न म प टी ता
2. इन शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो —
   धीरेंद्र, मछली, कटहल, तांबूल, पान
3. शब्द किसे कहते हैं ?
4. पद किसे कहते हैं ?
5. शब्द और पद में क्या अंतर है ?

2. शब्द-भेद

सभी भारतीय आर्यभाषाओं का मूल आधार संस्कृत है। हिंदी भाषा भारतीय आर्यभाषा है। संस्कृत के अनेक शब्द हिंदी में प्रयुक्त होते हैं। कुछ शब्द तो मूल रूप में प्रयुक्त होते हैं, जिन्हें तत्सम कहा जाता है। मुसलमान, अंग्रेज, फ्रांसीसी, पुर्तगाली अनेक जातियों ने इस भू-भाग पर शासन किया। इसलिए इनकी भाषा क्रमशः अरबी, फारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच, पुर्तगाली के अनेक शब्द हिंदी में आ गये।

इसी प्रकार व्याकरणिक इकाइयों के प्रभाव से भी शब्द में परिवर्तन होता है। अतः हम हिंदी भाषा में प्रयोग होने वाले शब्दों को नीचे लिखे आधारों पर वर्गीकृत कर सकते हैं।

शब्द-भेद - हिंदी भाषा में शब्दों को हम चार आधारों पर वर्गीकरण कर सकते हैं —

1. अर्थ के आधार पर
2. प्रयोग के आधार पर
3. उत्पत्ति के आधार पर
4. परिवर्तन के आधार पर

1. अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं -

(अ) **सार्थक** — इनका भाषा में अर्थ होता है। घर, पानी, हम, आम, क्या - ये सार्थक शब्द हैं।

(आ) **निरर्थक**— इनका भाषा में कोई अर्थ नहीं होता। रकट, टधम, फफाट, ओठा, वानी, बड़की- ये सब निरर्थक शब्द हैं।

टिप्पणी - कुछ निरर्थक शब्द ऐसे भी हैं, जो सार्थक शब्द के साथ आकर एक विशेष अर्थ देते हैं। जैसे —

रोटी-वोटी खाकर आना। रोटी-वोटी - रोटी या रोटी के समान और कुछ।

पानी-वानी पिलाओ। पानी-वानी - पानी या पानी के समान और कुछ।

2. प्रयोग के आधार पर हिंदी में शब्दों के चार प्रकार हैं —

(अ) तत्सम — संस्कृत के वे मूल शब्द जिनका हिंदी में प्रयोग होता है। जैसे — माता, पिता, शिक्षा, ज्ञान, अक्षर, आदि।

(आ) तद्भव— संस्कृत के वे परिवर्तित शब्द जिनका हिंदी में प्रयोग होता है।
जैसे —अग्नि से आग। भ्रातृ से भाई। कर्म से काम आदि।

(इ) देशज — हमारे देश की बोली या भाषा के विशेष शब्द जिनका हिंदी में प्रयोग होता है।
जैसे — डिबिया, ढेंकी, बेटी, खिड़की आदि।

(ई) विदेशी — भारत के बाहर में दोशों की भाषाओं के शब्द जिनका हिंदी में प्रयोग होता है। जैसे —

फारसी भाषा से — आराम, चश्मा, दिमाग, सरकार आदि।

अरबी भाषा से — अल्ला, किताब, हिसाब, तारीख आदि।

तुर्की भाषा से — कुली, चाकू, दारोगा, कैंची आदि।

अंग्रेजी भाषा से — डॉक्टर, टिकट, रेल, स्कूल आदि।

फ्रांसीसी भाषा से— कूपन, जज, होटल, फैशन आदि।

पुर्तगाली भाषा से— आचार, आलमारी, चाबी, गोभी आदि।

DAILY ASSAM

3. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के तीन प्रकार होते हैं—

(अ) रूढ़ — वे ऐसे शब्द होते हैं जो किसी दूसरे शब्द के योग से नहीं बनते हैं। इनकी उत्पत्ति, स्वतन्त्र रूप से होती है। यदि हम इनका खण्ड कर दें तो ये अर्थहीन हो जाते हैं।

मन (म/न) धन (ध/न) कान (का/न) रात (रा/त)

(आ) यौगिक — वे शब्द हैं जो दो या अधिक शब्दों के मेल से बनते हैं और खण्ड करने पर भी वे अपना-अपना अर्थ रखते हैं। जैसे — रामपुर (राम पुर), पाठशाला (पाठ शाला), देशद्रोही (देश द्रोही)

(इ) योगरूढ़ — वे शब्द हैं जो योगिक शब्दों से ही बनते हैं किन्तु ये सामान्य अर्थ न देकर विशेष अर्थ देते हैं। इनका यदि

हम खण्ड करें तो विशेष अर्थ की प्राप्ति नहीं होती। क्योंकि इनका अर्थ किसी विशेष वस्तु या व्यक्ति के साथ रूढ़ (स्थायी) हो जाता है। जैसे —

जलज (जल/ज) = कमल　　दशानन (दश/आनन) = रावण

पीतांबर (पीत/ अंबर) = श्रीकृष्ण　　गजानन (गज/आनन) = गणेश

4. परिवर्तन के आधार पर दो प्रकार के शब्द होते हैं —

विकारी — ये वे शब्द हैं जो वाक्य में प्रयोग होने पर परिवर्तित हो जाते हैं। विकारी शब्द क्रमशः — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूप में होते हैं। जैसे —

लड़का/ लड़के, लड़की　　तुम/ तुम्हें, तुमको, तुम्हारा, तुम्हीं

अच्छा/ अच्छे, अच्छी　　पढ़ना/ पढ़ा, पढ़ेगा, पढ़ी

अविकारी — वे शब्द जो वाक्य में प्रयुक्त होने पर परिवर्तित नहीं होते । इनको अव्यय भी कहते हैं। इन अविकारी शब्दों को क्रमशः- क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक कहते हैं। जैसे —

धीरे-धीरे = शर्मा धीरे-धीरे आया।　　ऊपर = माधवी ऊपर गया।

और = दिनेश और राधा आये हैं।　　शाबास = शाबास! हमारी टीम ने कमाल कर दिया।

टिप्पणी — शब्द-भेद के चारों आधार अर्थ, प्रयोग उत्पत्ति, परिवर्तन में परिवर्तन का आधार भाषा में अपना प्रमुख स्थान रखता है। इसे विकास, रूपांतर, विकार आदि का आधार भी कहते हैं। इसके दोनों वर्णों-विकारी और अविकारी का अगले पाठों में विस्तार से विवेचन किया जाएगा।

अभ्यास

1. भारतीय आर्य भाषाओं का मूल आधार क्या है ?
2. हिंदी में कौन-कौन-सी भाषाओं के शब्द प्रयुक्त होते हैं ?
3. हम हिंदी भाषा के शब्दों को कितने वर्णों में रख सकते हैं ?
4. निरर्थक शब्द किसे कहते हैं ?
5. तत्सम शब्द के पाँच उदाहरण दो।
6. आलमारी, डॉक्टर, नर्स, कोट, सरकार - ये किस प्रकार के शब्द हैं ?
7. रिक्त स्थानों में सही शब्द भरो —

(अ) दो या दो से अधिक अक्षरों के मेल से ..... बनते हैं। (शब्द, पद, वाक्य)।

(आ) शब्द भेद- के ..... आधार हैं। (आठ, दस, चार, दो)

(इ) शब्द-भेद के आधारों में ..... का आधार महत्वपूर्ण है। (अर्थ, उत्पत्ति, प्रयोग, परिवर्तन)

(ई) ..... शब्द सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ रखता है। (योगरूढ़, देशज, निरर्थक, विकारी)

8. 'है या नहीं' लगाकर इनको लिखो।

(अ) शब्द और पद एक ही है।

(आ) निरर्थक शब्द सार्थक शब्द के साथ मिलकर विशेष अर्थ देता है।

(इ) तत्सम और तद्भव शब्द समान होते हैं।

(ई) विकारी और अविकारी शब्दों का भाषा में महत्वपूर्ण स्थान होता है।

9. नीचे लिखे शब्दभेदों के पाँच-पाँच उदाहरण लिखो।

रूढ़ शब्द, देशज शब्द, निरर्थक शब्द, विकारी शब्द।

10. हिंदी भाषा में किन-किन विदेशी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग होता है? प्रत्येक के पाँच-पाँच उदाहरण लिखो।

3. विकारी शब्द

हिंदी के विकारी शब्दों को हम चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। व्याकरण में इन को क्रमश : -

1. संज्ञा	-	(रीता)
2. सर्वनाम	-	(वह)
3. विशेषण	-	(अच्छा)
4. क्रिया	-	(गाती)

कहतें हैं।

विकारी शब्द — संज्ञा

DAILY ASSAM

1. धीरेंद्र ब्रह्मपुत्र में नहाता है।
2. असम की एंडी भारत में प्रसिद्ध है।
3. डिगबै में तेल बहुत होता है।
4. अमेरिका में सोना बहुत होता है।

ऊपर के वाक्यों में क्रमश: ब्रह्मपुत्र, असम, एंडी, भारत, डिगबै तेल, अमेरिका, सोना ये सब संज्ञा शब्द हैं।

''किसी वस्तु, प्राणी, स्थान या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।''

संज्ञा के भेद-अर्थ के विचार में संज्ञा के पाँच भेद होते हैं। जैसे—

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. समूहवाचक संज्ञा } (हिंदी व्याकरण में कुछ विद्वान इन्हें जातिवाचक
4. द्रव्यवाचक संज्ञा } संज्ञा के अंतर्गत ही मानते हैं।)
5. भाववाचक संज्ञा

व्यक्तिवाचक संज्ञा

गुवाहाटी सुंदर नगर है। शंकरदेव भारत के महान संत थे।

सती जयमती और रानी लक्ष्मीबाई वीर नारियाँ थीं। नील नदी मिस्र में बहती है।

गुवाहाटी, शंकरदेव, लक्ष्मीबाई, नील नदी, मिस्र आदि शब्द किसी व्यक्ति, नदी, देश आदि के नाम हैं। ये विशिष्ट नाम वाले संज्ञा शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं।

'ये संज्ञा शब्द जिनसे किसी व्यक्ति, स्थान आदि के विशिष्ट नाम सूचित हों, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।'

जातिवाचक संज्ञा

असम की सभी औरतें कपड़ा बुनना जानती हैं।

कश्मीर में फल बहुत होते हैं।

काजीरंगा में पशु बहुत हैं।

जयपुर में भवन सुंदर हैं।

औरतें, कपड़ा, फल, पशु, भवन ये शब्द एक-एक जाति के प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। 'औरत' शब्द किसी भी औरत के लिये प्रयुक्त हो सकता है। इसी प्रकार कपड़ा, फल, पशु, भवन, पक्षी, मनुष्य, नदी, पहाड़, वृक्ष आदि शब्द भी जातिबोधक हैं।

''वे शब्द जिससे किसी वस्तु, प्राणी या पदार्थ की संपूर्ण जाति का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।''

समूहवाचक संज्ञा

मेले में भीड़ होती है।

कक्षा में ही सभा होगा।

मेला, भीड़, कक्षा सभा, आदि शब्द समूहवाचक है। 'मेला' में अनेक आदमी होते हैं। इसी प्रकार भीड़, कक्षा, सभा, गुच्छा, झुण्ड, टोली, सेना आदि भी समूहवाचक शब्द हैं।

''वे शब्द जिनसे पदार्थों या प्राणियों के समूह का बोध हो, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।''

द्रव्यवाचक संज्ञा

उत्तर प्रदेश में गेहूँ अधिक खाया जाता है।

असम में चावल अधिक खाया जाता है।

सोना और चाँदी से आभूषण बनते हैं।

आजकल दूध में पानी अधिक मिलाया जाता है।

गेहूँ, चावल, सोना, चाँदी, दूध, पानी — ये शब्द द्रव्यवाचक हैं। इन द्रव्यों का नापा या तौला जा सकता है। लोहा, घी, दही, ताँबा आदि भी द्रव्यवाचक संज्ञा हैं।

''वे शब्द जिनसे किसी द्रव्य का बोध हो और इन द्रव्यों को जिसे नापा या तौला जोखा जा सके, द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।''

भाववाचक संज्ञा

उमेश बचपन में बहुत खेलता था।

चोरी करना अच्छा नहीं है।

चीनी में मिठास अधिक होती है।

फूल में खुशबू होती है।

DAILY ASSAM

बचपन, चोरी, मिठास, खुशबू - इन शब्दों से किसी अवस्था, गुण, दोष, धर्म, व्यापार आदि का बोध होता है। शीतलता, गर्मी, धूप, शत्रुता, मित्रता, खट्टापन आदि भी इसी प्रकार के शब्द हैं।

ये शब्द किसी भाव को प्रकट करते हैं। भाव बताने वाले संज्ञा शब्द भाववाचक संज्ञा हैं।

''वे शब्द जिनसे किसी वस्तु या प्राणी के गुण दोष, अवस्था अथवा भाव का बोध हो उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।''

अभ्यास

1. विकारी शब्द कितने प्रकार के हैं ?
2. संज्ञा किसे कहते हैं ?
3. इन वाक्यों से व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द चुनकर लिखो —
   शंकरदेव और माधवदेव असम के महापुरुष थे।
   तेजपुर, चण्डीगढ़ और पेरिस सुंदर नगर हैं।
   गंगा, यमुना, नर्मदा और गोदावरी पवित्र नदियाँ हैं।
   कामाख्या, बद्रीनाथ और सोमनाथ तीर्थ-स्थान हैं।
4. इनमें से जातिवाचक और समूहवाचक संज्ञाओं को अलग करो —
   मनुष्य, भीड़, पशु, झुण्ड, पहाड़, कक्षा, टोली, वृक्ष, मेला, नदी।
5. इनमें से द्रव्यवाचक और भाववाचक संज्ञाओं को अलग करो —
   सोना, सुगंध, लोहा, ठण्ड, धूप, चीनी, पानी, तेल, कड़वाहट, मिठास।
6. इन शब्दों को जोड़कर भाववाचक संज्ञाएँ लिखो —
   खट्टा + ई, शत्रु + ता, बूढ़ा + पा, बाल + पन, चिकना + हट, नम्र + ता।

4. भाववाचक संज्ञा का गठन

हिंदी में भाववाचक संज्ञाएँ प्राय: किसी न किसी प्रत्यय के मिलने से बनती हैं। ये प्रत्यय पाँच प्रकार के विकारी शब्दों से मिलकर भाववाचक संज्ञा का निर्माण करते हैं।

1. संज्ञा से —

संज्ञा	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा
लड़का	+ पन	= लड़कपन
शत्रु	+ ता	= शत्रुता
चोर	+ ई	= चोरी

टिप्पणी— जातिवाचक संज्ञा में पन, ता, ई प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनायी जा सकती है।

2. सर्वनाम से —

सर्वनाम	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा
अपना	+ पन	= अपनापन
अपना	+ त्व	= अपनत्व
मैं	+ पन	= मैं-पन

DAILY ASSAM

3. विशेषण से —

विशेषण	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा
सरल	+ पन	= सरलता
लम्बा	+ ता	= लंबाई
भला	+ ई	= भलाई
गरम	+ ई	= गरमी

टिप्पणी — हिंदी में अधिकतर भाववाचक संज्ञाएँ विशेषण से बनती हैं।

4. क्रिया से

क्रिया	प्रत्यय	भाववाचक संज्ञा
चढ़ना	+ ई	= चढ़ाई
रोना	+ ई	= रुलाई
खुजलाना	+ आहट	= खुजलाहट
पढ़ना	+ ई	= पढ़ाई
लिखना	+ आवट	= लिखावट

टिप्पणी— क्रिया से जब प्रत्यय मिलता है तो धातु तो प्राय: मूल रूप में ही रहती है किंतु उनका 'ना' लुप्त हो जाता है।

5. अव्यय से —

अव्यय	प्रत्यय	भाववाचक
सम	+ ता	= समता
समीप	+ य	= सामीप्य

भाववाचक संज्ञाएँ प्राय: आई, ई, ता, त्व, हट, वट, पा, पन आदि प्रत्ययों से बनायी जाती हैं। जैसे—

1. आई	– चढ़	+ ता	= चढ़ाई	
2. ई	– चोर	+ ई	= चोरी	
3. ता	– मानव	+ ता	= मानवता	
4. त्व	– मनुष्य	+ त्व	= मनुष्यत्व	
5. आहट	– घबराना	+ आहट	= घबराहट	
6. आवट	– लिखना	+ आवट	= लिखावट	
7. पा	– बूढ़ा	+ पा	= बुढ़ापा	
8. पन	– लड़का	+ पन	= लड़कपन	

DAILY ASSAM

अभ्यास

1. भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?
2. भाववाचक संज्ञा कितने प्रकार के शब्दों से बनती हैं ?
3. भाववाचक संज्ञा में दूसरा शब्द कौन-सा होता है ?
4. कौन-सी संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनायी जाती है ?
5. भाववाचक संज्ञा बनाने वाले प्रत्ययों के नाम बताओ।
6. इनमें से भाववाचक संज्ञाओं को अलग करो -

   राम, सलीम, लड़ाई, गर्मी, लड़का, पशु, पशुत्व, बचपन, बनावट, चाँदी, लोहा, कक्षा, घबराहट।

राम बीमार है, इसलिए वह स्कूल नहीं जाएगा।

शीला भूखी है, इसलिए वह खाना खाएगी।

ऊपर के वाक्यों में क्रमशः राम और शीला शब्द संज्ञा है। इन्हीं शब्दों के स्थान पर दोनों वाक्यों में 'वह' का प्रयोग हुआ है। अर्थात् संज्ञा के स्थान पर 'वह' का प्रयोग हुआ। हिंदी में इसे सर्वनाम कहते हैं। इसी प्रकार मैं, तुम, वे, ये, हम, तू आदि सर्वनाम हैं।

सर्वनाम के प्रकार

हिंदी में छः प्रकार के सर्वनाम हैं -

1. पुरुषवाचक सर्वनाम
2. निजवाचक सर्वनाम
3. निश्चयवाचक सर्वनाम
4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
5. संबंधवाचक सर्वनाम
6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

1. पुरुषवाचक सर्वनाम—

DAILY ASSAM

मैं जाता हूँ। तुम जाते हो। वह जाता है।

यहाँ मैं, तुम और वह पुरुषवाचक सर्वनाम हैं।

मैं = कहने वाला, तुम = सुनने वाला और वह = जिसके विषय में कहा गया है।

पुरुषवाचक सर्वनाम उसे कहते हैं, जिससे कहने वाला, सुनने वाला और जिसके विषय में कहा जाए इसका विवेचक हो।

पुरुषवाचक सर्वनाम में तीन बातें अलग-अलग हैं। इसलिए इनके तीन भेद हैं।

(अ) प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम—

मैं घर जाऊँगा	मैं (एकवचन) — प्रथम पुरुष
हम तेजपुर जाएँगे	हम (बहुवचन) — प्रथम पुरुष

''जिस सर्वनाम से स्वयं के बारे में कहने वाले का बोध होता है, उसे प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम कहा जाता है।''

टिप्पणी — वचन का अर्थ है संख्या। जब किसी शब्द से ऐसी वस्तु प्राणी या पदार्थ का बोध होता है उस शब्द को हम एकवचन कहते हैं और जब एक से अधिक वस्तुओं या प्राणियों का ज्ञान होता तो उसे बहुवचन कहते हैं।

(आ) प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम—

तुम घर जाओ	तुम — बराबर के लिए मध्यम पुरुष
तू उमानंद जा	तू — छोटे के लिए मध्यम पुरुष
आप कामाख्या जाइए	आप — बड़े के लिए मध्यम पुरुष

जिस सर्वनाम से सुनने वाले या पढ़ने वाले का बोध हो उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(इ) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम—

वह खाना खा रही है।	वह — एकवचन अन्य पुरुष
वे खाना खा रही हैं।	वे — बहुवचन अन्य पुरुष

जिस सर्वनाम से प्रथम और मध्यम पुरुष को छोड़ कर किसी अन्य पुरुष का बोध हो उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

2. **निजवाचक** सर्वनाम —

मैं अपना काम आप कर लूँगा।

मैं स्वयं आपके पास आऊँगा।

मैं खुद ही जाऊँ।

मैं अपने आप चला जाऊँगा।

ऊपर के वाक्यों में आप, स्वयं, खुद, अपने आप - ये सब 'मैं' सर्वनाम के लिए ही प्रयुक्त हुए हैं। अत: इन्हें हिंदी में निजवाचक सर्वनाम कहा जाता है।

''जिस सर्वनाम से स्वयं या निज के बारे में अर्थ प्रकट हो उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।''

3. **निश्चयवाचक सर्वनाम** —

यह पुस्तक है। ये पुस्तकें हैं। वह नामघर है। वे आलमारियाँ हैं।

यह, वह निश्चयवाचक सर्वनाम हैं। इनसे किसी निश्चित वस्तु का बोध हो रहा है। वस्तुएँ क्रमश: पुस्तक, नामघर हैं। यह, वह सर्वनाम के बहुवचन का रूप क्रमश: ये और वे हैं।

''जिस सर्वनाम से किसी निश्चित वस्तु का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।''

4. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम—**

कोई सो रहा है। कुछ जा रहे हैं, कुछ रहे हैं।

कोई और कुछ अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं। ये ऐसे सर्वनाम हैं, जिनसे

प्राणी, वस्तु या पदार्थ के बारे में निश्चित ज्ञान नहीं होता। 'कोई' एक वस्तु के लिए और 'कुछ' अनेक वस्तुओं के लिए प्रयुक्त होता है।

''जिस सर्वनाम से अनिश्चय बना रहे अर्थात् जो किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु की ओर संकेत न करे, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।''

5. **संबंधवाचक सर्वनाम—**

जो पैदा हुआ है वह मरेगा भी।

जो आपने कहा था, वह मैंने कर दिया।

ऊपर के दोनों वाक्यों में से प्रत्येक वाक्य दो-दो उपवाक्यों से बना हुआ है। ये दोनों उपवाक्य जो-वह सर्वनाम से संबंधित हैं। इसलिए जो-वह संबंधवाचक सर्वनाम हैं।

''जिस सर्वनाम से किसी एक शब्द या वाक्य के किसी अन्य शब्द या वाक्य से संबंध का बोध हो, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं।''

6. **प्रश्नवाचक सर्वनाम—**

दिल्ली कौन जाएगा?

नगाँव में क्या होगा?

आपका शुभ नाम क्या है?

ऊपर के वाक्यों में कौन, क्या - ये सर्वनाम प्रश्न करने के लिए आए हैं।

''जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।''

अभ्यास

1. सर्वनाम किसे कहते हैं ?
2. निम्नलिखित वाक्यों से सर्वनाम चुनो —

   गुवाहाटी सुंदर नगर है। यह असम का बड़ा नगर भी है।

   मैं ब्रह्मपुत्र में स्नान करता हूँ।

   तुम और हम कल चेन्नई जाएँगे।

   हम सब भारतीय हैं।
3. पुरुषवाचक सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं ?
4. निश्चयवाचक और अनिश्चयवाचक सर्वनामों में क्या अंतर है ?
5. संबंधवाचक और अनिश्चयवाचक सर्वनामों में क्या अंतर है ?
6. निम्नलिखित सर्वनाम को अलग-अलग कर उनके नाम बताओ। जैसे—

   मैं, तुम, हम — पुरुषवाचक सर्वनाम

   क्या, कौन — प्रश्नवाचक सर्वनाम

   वे, ये, वह, कोई, तुम, तू, मैं, आप, स्वयं, अपने आप, कुछ, खुद, हम, जो, सो, यह।

सर्वनाम का रूप-परिवर्तक - कारक

(अ) **कारक और विभक्ति चिह्न :** हिंदी में संज्ञा या सर्वनाम का अन्य शब्दों से संबंध को 'कारक' कहा जाता है। कारकों का अपना अपना एक विषेश चिह्न होता है, जिसे विभक्ति कहते हैं। इन्हीं विभक्ति चिह्नों से शब्दों के संबंध का पता चलता है। जैसे —

मैंने तुमको एक पत्र लिखा।

राम ने मोहन को एक पत्र लिखा।

ऊपर के वाक्यों में 'ने' और 'को' विभक्ति चिह्न हैं। ये क्रमश: कर्ता और कर्म कारक के चिह्न हैं। इससे प्रथम वाक्य में सर्वनाम से सर्वनाम का और दूसरे वाक्य में संज्ञा का संबंध ज्ञात होता है।

कारक—

''संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप द्वारा उनका अन्य शब्दों से संबंध ज्ञात होता है, उसे कारक कहते हैं।''

विभक्ति—

''प्रत्येक कारक का एक निश्चित चिह्न होता है, जिसे विभक्ति कहते हैं।''

(आ) कारक के प्रकार —

हिंदी में आठ प्रकार के कारक हैं —

कारक	विभक्ति
1. कर्ता	ने, —0
2. कर्म	को, —0
3. करण	से, —0

4. संप्रदान	को, के, लिए
5. अपादान	से
6. संबंध	का, के, की, रा, रे, री
7. अधिकरण	में, पै, पर
8. संबोधन	हे, अरे, अजी

(इ) कारक — विभक्ति से सर्वनाम का रूप-पविर्तन —

सर्वनाम के साथ जब ये विभक्तियाँ लगती हैं तो सर्वनाम शब्द के साथ मिल जाती हैं और उसका रूप भी बदल देती हैं। जैसे —

उसने मोहन को मारा। उन्होंने उनको बुलाया।

प्रथम वाक्य में —'वह' सर्वनाम के साथ कर्ता कारक 'ने' की विभक्ति लगी हुई है। 'ने' के कारक 'वह' सर्वनाम का रूप बदल कर 'उस' हो गया और तब उस + ने = उसने हुआ।

इसी प्रकार दूसरे वाक्य में — (वे-उन + ने = उन्होंने)
(वे-उन + को = उनको) हुआ।

सर्वनामों का रूप-परिवर्तन

1. पुरुषवाचक सर्वनाम — उत्तम (प्रथम) पुरुष

मैं

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझको, मुझे	हमको, हमें
करण	मुझसे, मेरे द्वारा	हमसे, हमारे द्वारा
संप्रदान	मुझको, मुझे, मेरे लिए	हमको, हमें, हमारे लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
संबंध	मेरा-रे-री	हमारा-रे-री
अधिकरण	मुझमें-पर	हममें, हमारे में-पर

पुरुषवाचक सर्वनाम - मध्यम (द्वितीय) पुरुष

तू

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	तू, तूने	तुम, तुमने
कर्म	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
करण	तुझसे, तेरे द्वारा	तुमसे, तुम्हारे द्वारा
संप्रदान	तुझको तुझे, तेरे लिए	तुमको, तुम्हें, तुम्हारे लिए
अपादान	तुझसे	तुमसे
संबंध	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे
अधिकरण	तुझमें-पर-पै	तुममें-पर-पै

पुरुषवाचक सर्वनाम-अन्य (तृतीय) पुरुष

वह

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसको, उसे	उनको, उन्हें
करण	उससे, उसके द्वारा	उनसे, उनके द्वारा
संप्रदान	उसको, उसे, उसके लिए	उनको, उन्हें, उनके लिए
अपादान	उससे	उनसे
संबंध	उसका, उसकी, उसके	उनका, उनकी, उनके
अधिकरण	उसमें, उस पर	उनमें, उन पर

2. निजवाचक सर्वनाम

आप

कर्ता	आप
कर्म	अपने को
करण	अपने से
संप्रदान	अपने को, के लिए
अपादान	अपने से
संबंध	अपना, अपने, अपनी
अधिकरण	अपने, में, पर

3. निश्चयवाचक सर्वनाम

यह

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म	इसे, इसको	इन्हें, इनको
करण	इससे	इनसे
संप्रदान	इस, इसको, इसके, लिए	इन्हें, इनको, इनके लिए
अपादान	इससे	इनसे
संबंध	इसका, इसको, इसके	इनका-को-के
अधिकरण	इसमें, इस पर	इनमें, पर

टिप्पणी—इसी प्रकार 'वह' और 'वे' का भी रूप-परिवर्तन होता है। जैसे —

कर्ता	वह	उसने, वे, उन्होंने
कर्म	उसका, उसे	उनको, उन्हें

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

कोई

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	कोई, किसी ने	कोई, किन्होंने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से	किन्हीं से
संप्रदान	किसी को, किसी के लिए	किन्हीं को, किन्हीं के लिए
अपादान	किसी से	किन्हीं से
संबंध	किसी का, किसी की, किसी के	किन्हीं का-के-की
अधिकरण	किसी में, किसी पर	किन्हीं में, किन्हीं पर

टिप्पणी— 'कोई' का बहुवचन रूप 'कोई-कोई', किसी-किसी ने, किसी-किसी को जैसा भी होता है।

2. अनिश्चयवाचक सर्वनाम 'कुछ' का रूप परिवर्तन नहीं होता, किंतु उनके आगे विभक्ति अवश्य लगती है। जैसे — कुछ + ने-कुछ ने। कुछ + को = कुछ को आदि।

5. संबंधवाचक सर्वनाम

जो

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिससे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिससे	जिनसे
संप्रदान	जिसको, जिसके लिए	जिनको, जिनके लिए
अपादान	जिससे	जिनसे
संबंध	जिसका-की-के	जिनका-की-के
अधिकरण	जिसमें-पर	जिनमें-पर

टिप्पणी — संबंधवाचक अन्य सर्वनामों का रूप परिवर्तन नहीं होता।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

कौन

कारक	**एकवचन**	**बहुवचन**
कर्ता	कौन, किसने	कौन, किन्होंने
कर्म	किसको, किसे	किनको, किन्हें
करण	किससे	किनसे
संप्रदान	किसको, किसे	किनको, किन्हें
अपादान	किससे, किसे	किनसे
संबंध	किसमें-पर	किनमें-पर

टिप्पणी — प्रश्नवाचक सर्वनाम 'क्या' का रूप-परिवर्तन नहीं होता और न ही इसके आगे विभक्ति लगती है। बहुवचन बनाने के लिए इसके द्वितीय रूप का प्रयोग किया जाता है।

जैसे — नीलू शिलांग से क्या-क्या लाई?

अभ्यास

1. सर्वनाम का रूप कौन बदलाता है ?
2. कारक किसे कहते हैं ?
3. कारक की विभक्तियों के नाम बताओ।
4. विभक्तियाँ सर्वनाम पर अधिक प्रभाव डालती हैं या संज्ञा पर ?
5. नीचे लिखे सर्वनाम में संबंध कारक की विभक्ति लिखो —
   मैं, हम, वह, कोई
6. निम्नलिखित सर्वनामों में कर्मकारक की 'को' विभक्ति लगाओ।
   मैं, तू, तुम, वह, वे, ये, हम, क्या, कुछ, कोई, कौन, आप, जो।
7. निम्नलिखित सर्वनामों से विभक्ति हटाकर उनके मूल रूप लिखो —
   मैंने, उसने, उन्होंने, इसने, इन्होंने, उसने, किसने, किसी ने, हमने,जिसने।

विकारी शब्द—विशेषण

(अ) विशेषण —

1. असम में सुंदर घर होते हैं।
2. असम हरा-भरा राज्य है।
3. पंजाब उपजाऊ राज्य है।
4. मैं तीन भाषाएँ पढ़ता हूँ।

ऊपर के वाक्यों में क्रमश: सुंदर, हरा-भरा, उपजाऊ, तीन विशेषण हैं, क्योंकि ये घर, राज्य, भाषाओं की विशेषता बतला रहे हैं। इसी प्रकार अच्छा, बुरा, छोटा, बड़ा, लंबा, मोटा, कम, अधिक, पाँच, बहुत आदि भी विशेषण हैं।

'जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, अवस्था आदि बताता है, उसे विशेषण कहते हैं।'

विशेषण विकारी शब्द है, क्योंकि इसका लिंग, वचन आदि के अनुसार रूप बदलाता है। जैसे — अच्छा लड़का। अच्छे लड़के को—अर्थात् 'अच्छा' अच्छे हो गया।

(आ) विशेषण के प्रकार —

गुण, संख्या, परिमाण आदि के अनुसार विशेषण पाँच प्रकार के हैं।

जैसे —

1. गुणवाचक विशेषण
2. संज्ञावाचक विशेषण
2. परिमाणवाचक
4. संकेतवाचक विशेषण
5. व्यक्तिवाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण

यह सुंदर चित्र है। सलीम अच्छा लड़का है।

सुंदर और अच्छा क्रमश: चित्र और लड़का संज्ञाओं के गुण बता रहे हैं। ये गुणात्मक विशेषण हैं। इसी प्रकार मीठा, बुरा, भला, पीला आदि भी गुणवाचक विषेशण हैं।

'जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण प्रकट करता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।'

2. संख्यावाचक विशेषण

असम के विद्यालय में तीन भाषाएँ पढ़ायी जाती हैं।

मैंने दो पुस्तकें खरीदीं। भारत में सैकड़ों लोग गरीब हैं।

ऊपर के वाक्यों में तीन, दो, सैकड़ों संख्यावाचक विशेषण हैं, क्योंकि ये विशेषण भाषाएँ, पुस्तकें और लोगों की संख्या का बोध करा रहे हैं। इसी प्रकार पाँच, हजारों, दस, कुछ, थोड़ा, आदि भी संख्यावाचक विशेषण हैं।

'जो विशेषण किसी वस्तु की संख्या प्रकट करता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।'

टिप्पणी — संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार का होता है।

पहला, निश्चित संख्यावाचक विशेषण— जैसे - पाँच लड़के, चौथा लड़का।

दूसरा, अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण- जैसे — कुछ पुस्तकें, सैकड़ों रुपये।

3. परिमाणवाचक विशेषण

थोड़ा पानी लाओ। आप बहुत बुद्धिमान है।

मैंने चार मीटर कपड़ा खरीदा।

थोड़ा, बहुत, चार परिमाणवाचक विशेषण हैं, क्योंकि ये ऐसी वस्तुओं का परिमाण बता रहे हैं, जिन्हें हम तौल या नाप सकते हैं।

'जो विशेषण नाप-तौल या परिणाम प्रकट करता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।'

4. संकेतवाचक विशेषण

यह कपड़ा नीला है।

वह लड़का प्रमोद है।

इस पुस्तक का नाम क्या है ?

ऊपर के वाक्यों में यह, वह, इस संकेतवाचक विशेषण हैं। ये क्रमश: नीला, प्रमोद, पुस्तक और फल की ओर संकेत कर रहे हैं। इसे सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं, क्योंकि यह, उस, कौन, क्या, कुछ आदि सर्वनाम हैं। ये जब किसी संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, तब ये विशेषण माने जाते हैं।

'जो विशेषण संज्ञा की ओर संकेत करते हैं, उन्हें संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।'

टिप्पणी— संकेतवाचक विशेषण को सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं। इसके तीन भेद-माने जाते हैं। जैसे —

1. प्रश्नवाचक — कौन, क्या
2. निश्चयवाचक — यह, वह, उस, इस
3. अनिश्चयवाचक — कुछ, कोई

5. व्यक्तिवाचक विशेषण

भारतीय जवानों ने पाकिस्तानी सेना को हरा दिया।

असमीया रेशम सारे भारत में प्रसिद्ध है।

कश्मीरी सेब सब पसंद करते हैं।

जापानी रेडियो मजबूत है।

ऊपर भारतीय, पाकिस्तानी, असमीया, कश्मीरी, जापानी व्यक्तिवाचक विशेषण हैं, क्योंकि ये क्रमश: भारत, पाकिस्तान, असम, कश्मीर, जापान व्यक्तिवाचक स्थान सूचक संज्ञाओं से बने हैं। इसी प्रकार पंजाबी गेहूँ, नागपुरी संतरा, बंगाली मिठाई, गोवालपरीया बोली में पंजाबी, नागपुरी, बंगाली, गोवलपरीया भी व्यक्तिवाचक विशेषण हैं।

''व्यक्तिवाचक संज्ञाओं से बनने वाले विशेषण व्यक्तिवाचक विशेषण कहलाते हैं।''

(इ) अन्य शब्दों से बनने वाले विशेषण

हिंदी भाषा में मूल विशेषणों के अतिरिक्त अन्य शब्दों से मिलकर भी विषेषण बनते हैं। संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और अव्यय - इन शब्दों का विशेषणों के निर्माण में प्रमुख स्थान है। जैसे —

1. संज्ञा से बनने वाले विशेषण

संज्ञा	प्रत्यय	विशेषण
पहाड़	+ ई	= पहाड़ी
ग्राम	+ इन	= ग्रामीण
सेना	+ इक	= सैनिक
धन+	वान =	धनवान
श्री	+ मान	= श्रीमान

भूख + आ = भूखा
दुख + इया = दुखिया
असम + ईया = असमीया

2. **सर्वनाम से बनने वाले विशेषण**

यह + से = ऐसा, इतना
वह + से = वैसा, उतना
जो + से = जैसा, जैसे
मैं + रा = मेरा (हमारा, तुम्हारा)
उस + का = (उनका, इनका) आदि।

3. **क्रिया से बनने वाले विशेषण**

धातु	प्रत्यय	विशेषण
टिक	+ आऊ	= टिकाऊ
झगड़ा	+ आलू	= झगड़ालू
बढ़	+ इया	= बढ़िया
मर	+ इयल	= मरियल
लूट	+ एरा	= लूटेरा
गा	+ वैया	= गवैया
मिलन	+ सार	= मिलनसार
पढ़ना	+ वाला	= पढ़नेवाला

DAILY ASSAM

4. **अव्यय से बनने वाले विशेषण**

भीतर + ई = भीतरी
ऊपर + ई = ऊपरी
बाहर + ई = बाहरी

अभ्यास

1. विशेषण किसे कहते हैं ?
2. विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ?
3. नीचे लिखे विशेषण किस प्रकार के विशेषण हैं ?
   सुंदर, अच्छा, बुरा, काला, पीला, मीठा, दो, तीन, पाँच, सैकड़ों, हजारों, कुछ, थोड़ा, बहुत, चौथा, पाँचवाँ, उस, इस, कौन, क्या, असमीया, जापानी, बंगाली।
4. नीचे लिखे शब्दों में प्रत्यय जोड़कर विशेषण बनाओ।
   पहाड़, ग्राम, असम, भारत, मैं, जो, लूट, पढ़ाना, भीतर, बाहरी।
5. विशेषण और सर्वनाम में क्या अंतर है ?

विकारी शब्द — क्रिया

क्रिया अर्थात् करना या होना। वाक्य में जिस शब्द में कुछ करना या होना सूचित होता है, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे— राम गया। यहाँ 'गया' क्रिया है।

वैसे ही — सुरेश ब्रह्मपुत्र में स्नान कर रहा है।

ऊपर के वाक्य में यदि हम 'स्नान कर रहा है' को छोड़ दें तो अर्थ प्राप्त नहीं होगा। 'सुरेश ब्रह्मपुत्र में' कहने से सुनने वाला अनेक अर्थ निकालेगा।

सुरेश ब्रह्मपुत्र में — मर रहा था
कूद रहा था

बह रहा था
नहा रहा था
मछली मार रहा था
नाव चला रहा था
डूब रहा था - आदि

अत: वाक्य का एक निश्चित अर्थ प्राप्त करने के लिए क्रिया का होना आवश्यक है। हिंदी में क्रिया वाक्य के अंत में आती है। जैसे —

	कर्ता	कर्म	क्रिया
1.	राम	फल	खा रहा है।
2.	नीलू	कीर्तन-घोषा	पढ़ रही है।
3.	सलीमा	भात पका	रही है।

क्रिया एक विकारी शब्द (पद) है, क्योंकि लिंग, वचन, काल के अनुसार इसमें परिवर्तन होता है। जैसे —

1. राम जा रहा है।
2. राम और रहीम जा रहे हैं।
3. तू तेजपुर जा रहा है।
4. हम कानपुर जा रहे हैं।

इसी प्रकार लिंग और काल के अनुसार भी परिवर्तन होता है।

क्रिया के प्रकार—

हिंदी भाषा में क्रियाओं के मुख्य पाँच भेद होते हैं। जैसे —

1. सकर्मक क्रिया 2. अकर्मक क्रिया 3. प्रेरणार्थक क्रिया
4. नामधातु-प्रधान क्रिया 5. संयुक्त क्रिया

वर्गीकरण में प्रथम दो का संबंध कर्म से है। ये क्रियाएँ कर्म या कर्ता से अपनासंबंध रखती हैं और रूप भी बदलाती हैं।

अंतिम-तीन भेद व्युत्पत्ति में आधार पर किये गए हैं। इनमें से प्रत्येक क्रिया-वर्ग मूल धातु से संबंध रखते हुए अन्य शब्दों या प्रत्ययों से मिलकर बनता है और विशेष अर्थ देता है।

1. सकर्मक क्रिया

सकर्मक का अर्थ है कर्म के साथ

रीता भात खा रही है।

1 2 3

ऊपर के वाक्यों में 'रीता' खाने का काम कर रही है। इसलिए 'रीता' कर्ता पद है और 'खा रही है' क्रिया पद है। 'भात' कर्ता की क्रिया का आधार है, अत: कर्म है।

कर्म का अर्थ है कर्ता के काम या क्रिया का आधार। इसकी विभक्ति 'को' है - जो प्राणीवाचक कर्म के साथ प्राय: लगती है और अप्राणीवाचक कर्म पद के साथ प्राय: नहीं लगती है।

दिनेश कुत्ते को मारता है।

मोहम्मद लकड़ी काटता है।

''जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़े उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।''

सकर्मक क्रिया के प्रकार —

(अ) एक कर्म वाली क्रियाएँ - जिनका एक ही कर्म हो। जैसे —

1. हम कटहल खाते हैं।
2. सीता चाय बनाती है।

(आ) द्विकर्मक क्रियाएँ - जिनका साथ अर्थ प्रकट के लिये दो कर्म आते हैं। जैसे —

गुरुजी हमको हिंदी पढ़ाते हैं।

माताजी सुरेश को फल देती है।

(इ) सजातीय क्रियाएँ - कोई अकर्मक क्रिया भी यदि अपनी धातु से बने हुए कर्म के साथ आती है तो वह सकर्मक हो जाती है और उसे सजातीय क्रिया कहते हैं। जैसे —

वह गाना गाता है।

2. अकर्मक क्रिया

अकर्मक का अर्थ है 'कर्म से रहित'।

उमेश रोता है।

धीरेन नहाता है।

सीता बोलती है।

ऊपर के वाक्यों में रोता, नहाता, बोलती क्रियाएँ क्रमशः उमेश, धीरेन और सीता के अनुसार हैं। ये तीनों कर्ता पद हैं। इन क्रियाओं का कोई कर्म नहीं है। ये अकर्मक क्रियाएँ हैं।

टिप्पणी— अकर्मक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं।

1. पूर्ण अकर्मक — इन क्रियाओं से पूरे अर्थ की प्राप्ति हो जाती है। जैसे — सीता सोती है।

2. अपूर्ण अकर्मक — इन क्रियाओं से पूरे अर्थ की प्राप्ति नहीं होती है। इसलिए अकर्मक क्रिया के पहले विशेषण या संज्ञा पद को जोड़ना पड़ता है। जैसे —

पिताजी हो गए हैं। (अपूर्ण अर्थ)

पिताजी बीमार हो गए हैं। (पूर्ण अर्थ)

व्युत्पत्ति के आधार पर हिंदी धातुओं में प्रमुख दो भेद होते हैं — मूल और यौगिक।

1. मूल धातु — जो धातु किसी दूसरे शब्द के योग से नहीं बनती हो, उसे मूल धातु कहते हैं। जैसे — हो, जा, पढ़, लिख, हँस, उठ, बोल।

2. यौगिक धातु — जो धातु किसी अन्य शब्द के योग से बने, उसे यौगिक धातु कहते हैं। जैसे —

हो + जाना = हो जाना पढ़ + लेना = पढ़ लेना

यौगिक धातु तीन प्रकार के होते हैं —

1. प्रेरणार्थक 2. नामधातु 3. संयुक्त धातु

1. प्रेरणार्थक क्रिया

वाक्य में प्रेरणार्थक क्रिया का प्रयोग तब होता है, जब वाक्य का कर्ता स्वयं काम न करे अपितु किसी अन्य से उस कम को करवाये। कर्ता भी सक्रिय रहता है, किंतु वह स्वयं उस काम को अपने हाथ से नहीं करता है। जैसे—

रेखा सविता से चिट्ठी लिखवाती है।

राम मुझसे श्याम को पिटवाना चाहता है।

ऊपर के वाक्यों में रेखा और राम कर्ता है, किंतु लिखने और पीटने का काम क्रमशः ''सविता और मुझसे'' होता है।

इसी प्रकार—

कर + वाना = करवाना

मर + वाना = मरवाना

बोल + वाना = बोलवाना

दौड़ + वाना = दौड़वाना

लड़ + वाना = लड़वाना - आदि प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं।

'जब कर्ता किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु को प्रेरणा देकर कोई कार्य करवाता है, तब उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।'

2. नामधातु क्रिया

नामधातु क्रिया भी यौगिक धातु का ही एक भेद है। इसमें क्रिया संज्ञा विशेषण के साथ जुड़ी हुई होती है।

1. राम ने सलीम का दिल दुखाया।
2. चीन ने भारत की जमीन हथिया ली।

नाम	धातु	नामधातु क्रिया
हाथ	+ आ	= हथिया (हथियाना)
दुख	+ आ	= दुखा (दुखाना)
चिकना	+ ना	= चिकनाना

ऊपर के वाक्यों में 'हाथ', 'दुख' संज्ञा और 'चिकना' विशेषण है। इन्हें 'नाम' कहा जाता है। इनमें 'आ' + 'ना' जोड़कर नामधातु क्रियाएँ बनाई गई हैं।

'संज्ञा या विशेषण शब्दों के आगे 'आ' या 'ना' जोड़कर जो क्रिया बनती हैं, उन्हें नामधातु क्रियाएँ कहते हैं।'

3. संयुक्त क्रियाएँ

संयुक्त क्रिया का अर्थ है - कोई क्रियाओं का मिला हुआ रूप। किसी मुख्य क्रिया को शक्तिशाली बनाने के लिए कुछ सहायक क्रियाओं का सहारा लिया जाता है। ऐसी क्रियाओं में मुख्य क्रिया के अनुसार ही अर्थ निश्चित होता है।

ब्रह्मपुत्र में बाढ़ आ गई।

क्या, तुम कामाख्या पहाड़ पर चढ़ सकते हो?

इस समय तांबूल तो खाया ही जा सकता है।

ऊपर के वाक्यों में - आ गई, चढ़ सकते हो, खाया जा सकता है, क्रियापद हैं- इनमें आ, चढ़, खाया मुख्य क्रियाएँ हैं और गई, सकते हो, जा सकता है -ये सहायक क्रियाएँ हैं। इसी प्रकार - आया करता है, आया-जाया करता है, रो रहा है, रोया नहीं जा रहा है आदि भी संयुक्त क्रियाएँ हैं। ''दो या दो से अधिक क्रियाओं के योग से बनी क्रिया को संयुक्त क्रिया कहते हैं।''

अभ्यास

1. क्रिया किसे कहते हैं?
2. क्रियाएँ कितने प्रकार की होती हैं?
3. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया स्थानों की पूर्ति पास दी गई क्रियाओं से करो—
   1. कैलाश नदी में ..... । (चलता है, नहाता है, सोता है)
   2. गणेश कुसुम से स्वेटर ..... । (उठवाना है, लिखवाता है, बुनवाता है)
   3. मैं अगले हप्ते चेन्नई ..... । (बैठूँगा, जाऊँगा, सुनूँगा)
   4. रमेश पुस्तक ..... । (पढ़ती है, पढ़ाते हैं, पढ़ता है)
   5. नीलू से यह पत्र ..... । (पढ़ी नहीं जा रही है, पढ़ा नहीं जा रहा है)
4. नीचे दी हुई क्रियाओं के प्रकार बताओ —

   जैसे — खाना - सकर्मक क्रिया
   हँसना - अकर्मक क्रिया
   हथियाना - नामधातु क्रिया
   पिलवाना - प्रेरणार्थक क्रिया
   आ सकना - संयुक्त क्रिया

   नहाना, मुस्कराना, लिखना, पढ़ना, खाना, दुखाना, चिकनाना, पिटना, करवाना, दागना, छींकना, दिलवाना, जाने लगना, पढ़ सकना, सोना सुलवाना, आ जाना।
5. द्विकर्मक क्रिया और प्रेरणार्थक क्रिया में क्या अंतर है?

अविकारी शब्द

भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनका लिंग, वचन, काल के आधार पर कोई परिवर्तन नहीं होता। हिंदी व्याकरण में ऐसे शब्दों को अविकारी शब्द कहते हैं। इन्हें अव्यय, अपरिवर्तनशील आदि भी कहते हैं।

अविकारी शब्दों को हम चार भागों में रख सकते हैं —

1. क्रिया-विशेषण 2. संबंधबोधक 3. समुच्चयबोधक 4. विस्मयादिबोधक

1. अविकारी शब्द — क्रिया-विशेषण

1. क्रिया-विशेषण

क्रिया-विशेषण का अर्थ है क्रिया की विशेषता बताना। हिंदी भाषा में क्रिया-विशेषण का अर्थ के विचार से विशेष महत्व बताना। यह शब्द कभी क्रिया की विशेषता बताना है तो कभी क्रिया विशेषण की।

वाक्य में क्रिया-विशेषण प्राय: क्रिया के पूर्व ही आता है, परंतु कभी-कभी वह क्रिया से कुछ हटकर भी प्रयुक्त होता है। ऐसे अवस्था से क्रिया-विशेषण का पता लगाना कठिन हो जाा है, परंतु इसका अन्य रूपों में जब हम प्रयोग करके देखें तो हमें मालूम हो जाएगा कि यह क्रिया-विशेषण है या विशेषण। फिर भी साधारणत: क्रिया-विशेषण का संबंध क्रिया से है, यह क्रिया के साथ आता है और अपरिवर्तनशील होता है। दूसरी ओर विशेषण का संबंध संज्ञा या सर्वनाम से है, यह संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ आता है और परिवर्तनशील है।

विशेषण—

सलीम अच्छा लड़का है।

उषा अच्छी लड़की है।

क्रिया-विशेषण —

थॉमस धीरे पढ़ता है।

मीना धीरे पढ़ती है।

सतीश जोर-जोर से हँसता है।

सुनीता जोर-जोर से हँसती है।

ऊपर के प्रथम दो वाक्यों में 'अच्छा, अच्छी' विशेषण हैं। ये शब्द लड़का, लड़की की विशेषता बता रहे हैं और परिवर्तनशील हैं।

अंतिम चार वाक्यों में - धीरे, जोर-जोर से क्रिया-विशेषण हैं। ये शब्द क्रमश: पढ़ना और हँसना क्रियाओं की विशेषता बतला रहे हैं और अपरिवर्तनशील हैं। चाहे स्त्री या पुरुष, एक हो या अनेक क्रिया-विशेषण सदा एक समान अपरिवर्तनशील होते हैं। इसी प्रकार धीरे-धीरे, जल्दी, तेज, झट, पश्चात्, पीछे, आगे, बहुत आदि भी क्रिया-विशेषण हैं।

''जिस अव्यय शब्द से किसी क्रिया की विशेषता प्रकट हो, उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं''।

2. **क्रिया-विशेषण के प्रकार—**

क्रिया-विशेषण अर्थ के अनुसार चार प्रकार हैं —

1. स्थानवाचक
2. कालवाचक
3. परिमाणवाचक
4. रीतिवाचक

स्थानवाचक क्रिया-विशेषण

1. रामू पीछे आ रहा है।
2. रिक्शा बाएँ मुड़ गया।
3. शीला, इधर-उधर मत दौड़ो।

ऊपर के वाक्यों में पीछे, बाएँ, इधर-उधर क्रिया-विशेषण, स्थान, स्थिति, दिशा आदि की सूचना दे रहे हैं। ये सब स्थानवाचक क्रिया-विशेषण हैं। इसी प्रकार आर-पार, ऊपर, नीचे, आगे आदि भी स्थानवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

''जो शब्द किसी व्यापार के होने का स्थान निश्चित करें, उसे स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।''

कालवाचक क्रिया-विशेषण

पिताजी कामाख्या मंदिर सबेरे जाएँगे।

हमें दिन भर मेहनत करनी चाहिए।

सुरेश ने मुझको बार-बार बुलाया।

ऊपर के वाक्यों में सबेरे, दिन-भर, बार-बार क्रिया-विशेषण समय और अवधि की ओर संकेत कर रहे हैं। इसलिए ये कालवाचक क्रिया-विशेषण हैं। इसी प्रकार आजकल, अब, फिर, कभी-कभी, प्रतिदिन, घड़ी-घड़ी आदि भी कालवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

''जो शब्द किसी व्यापार के होने का समय प्रकट करता है, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।''

परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण

असम में चाय बहुत होती है।

यह काम लगभग पूरा हो गया है।

पंजाब में गेहूँ काफी होता है।

अमेरिका में सोना अधिक है।

मुहम्मद और थॉमस बारी-बारी से गा रहे हैं।

ऊपर के वाक्यों में बहुत, लगभग, अधिक, काफी, बारी-बारी से परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण हैं। इनसे किसी क्रिया के कम-ज्यादा होने का परिमाण मालूम होता है। कोई क्रिया-व्यापार पर्याप्त, बराबर, कम या ज्यादा हो, उस समय क्रिया के साथ इस प्रकार के विशेषणों का व्यवहार होता है। इसी प्रकार खूब, थोड़ा, जरा, निरा, बस, यथेष्ट, इतना, कितना, बढ़ कर, क्रमशः, तिल-तिल आदि भी परिमाणवाचक क्रिया विशेषण हैं।

''जो शब्द क्रिया के परिमाण प्रकट करते हैं, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।''

रीतिवाचक क्रिया-विशेषण

सतीश धुबड़ी से एकाएक आ गया।

हाथी धीरे-धीरे चल रहा है।

मैं कल आपके घर अवश्य आऊँगा।

तुम कल यहाँ मत आना।

ऊपर के वाक्यों में एकाएक, धीरे-धीरे, अवश्य, मत रीतिवाचक क्रिया-विशेषण हैं। इनसे क्रिया के होने की रीति, तरीका आदि का बोध होता है। इसी प्रकार क्रिया के संबंध में प्रकार, स्वीकार, निश्चय, अनिश्चय, कारण, निषेध आदि भावों का बोध कराने वाले शब्द भी रीतिवाचक क्रिया-विशेषण ही होते हैं। जैसे — स्वयं, मानो, प्रेमपूर्वक, जी, हाँ, ठीक, शायद, क्यों, ही, भी, तो, मात्र, भर, तक, न, नहीं, मत आदि।

''जो शब्द क्रिया के होने की रीति का बोध करता है, उसे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।''

टिप्पणी — वाक्य में क्रिया-विशेषण का प्रयोग प्रायः क्रिया के पूर्व ही होता है। इनका स्थान बदलने से प्रायः वाक्य के अर्थ में भी कुछ अंतर आ जाता है। जैसे —

राम आज शायद आ जाए।

शायद आज राम आ जाए।

आज शायद राम आ जाए।

अभ्यास

1. क्रिया-विशेषण किसे कहते हैं ?
2. क्रिया-विशेषण और विशेषण में क्या अंतर है ?
3. क्रिया-विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ?
4. नीचे लिखे विशेषणों और क्रिया-विशेषणों को अलग-अलग करो —
   धीरे, मीठा, अब, जब, बुद्धिमान, सीधा, बस, दिनभर, लंबा, छोटा, बार-बार, आजकल, दो, तीन, चार, कभी-कभी, यहाँ, वहाँ, चालक, सुस्त, पीला।
5. नीचे लिखे क्रिया-विशेषणों को अलग-अलग वर्गों में रखो—
   जैसे - आजकल—कालवाचक क्रिया-विशेषण
   ऊपर—स्थानवाचक क्रिया-विशेषण
   कभी-कभी, अब, बस, दिनभर, नीचे, बाएँ, तुरंत, फिर, बहुत, लगभग, एकाएक, रोते हुए, लगातार, धीरे-धीरे, खूब, इतना, बढ़कर, शायद, नहीं, ही, अवश्य।
6. नीचे लिखे क्रिया-विशेषणों को वाक्यों में प्रयोग करो।
   धीरे-धीरे, कभी-कभी, दिनभर, इधर-उधर, अवश्य।

2. अविकारी शब्द—संबंधबोधक

संबंधबोधक का अर्थ है संबंध बताने वाला। वाक्य में संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ संबंधबोधक शब्द का व्यवहार होता है। ये शब्द अपरिवर्तनशील होते हैं और संज्ञा का संबंध वाक्य के अन्य शब्दों से निश्चित करते हैं।

हेमांगिनी के साथ रजनी भी सिनेमा देखने गई।

महेंद्र के पास दो पुस्तकें हैं।

माधव की अपेक्षा वासुदेव कम काम करता है।

अब्दुल के लिए एक कलम चाहिए।

ऊपर के वाक्यों में 'साथ' रजनी का संबंध 'सिनेमा देखने' क्रिया से जोड़ता है। इसी प्रकार संबंधबोधक शब्द व्युत्पत्ति और अर्थ के आधार पर अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे—

1. मूल संबंधबोधक — बिना, तक, भर आदि।
2. यौगिक संबंधबोधक — वास्ते, अपेक्षा, मारफत आदि।
3. स्थानवाचक संबंधबोधक — बाहर, भीतर, पास, निकट आदि।
4. कालवाचक संबंधबोधक — पूर्व, पश्चात्, बाद, पीछे आदि।
5. शादृश्यवाचक संबंधबोधक — भाँति, तरह, समान, जैसा आदि।
6. विपरीतवाचक संबंधबोधक —विरुद्ध, खिलाफ, विपरीत आदि।
7. तुलनावाचक संबंधबोधक — सामने, अपेक्षा, बनिस्बत आदि।

उपर्युक्त संबंधबोधक शब्दों के अतिरिक्त और भी अनेक शब्द हैं, जिनको हम अन्य वर्गों में रखकर वर्गीकरण कर सकते हैं। जैसे — आर-पार, बाबत, द्वारा, जरिए, साथ, रहित, सिवा, खातिर, कारण, भर, मात्र, पर्यंत आदि।

''जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका वाक्य के अन्य शब्दों के साथ संबंध स्थापित करता है, उसे संबंधबोधक कहते हैं।''

3. अविकारी शब्द — समुच्चयबोधक

समुच्य का अर्थ है —'मिलाना'। समुच्चयबोधक शब्द वाक्य में दो शब्द या उपवाक्यों की मिलाने का काम करता है।

डिब्रुगढ़ और तेजपुर असम के सुंदर शहर है।

मैंने कल तुम्हारी प्रतीक्षा की, किंतु तुम नहीं आए।

गाय की रक्षा करना हमारा धर्म है, क्योंकि वह दुधारू पशु है।

ऊपर के वाक्यों में और, किंतु, क्योंकि समुच्चयबोधक शब्द है। 'और' डिब्रुगढ़ से तेजपुर को जोड़ रहा है, इसी प्रकार 'किंतु' और 'क्योंकि' भी दो वाक्यों को जोड़ रहे हैं। अर्थ के आधार पर इनके अनेक भेद हो सकते हैं। जैसे—

1. संयोजक समुच्चयबोधक — तथा, एवं, और आदि।
2. विभाजक समुच्चयबोधक — अथवा, नहीं तो आदि।
3. विरोधक समुच्चयबोधक — लेकिन, मगर, किंतु आदि।
4. परिमाणवाचक समुच्चयबोधक — अतः, अतएव, इसलिए आदि।
5. उद्देश्यवाचक समुच्चयबोधक — जो, ताकि, कि आदि।
6. संकेतवाचक समुच्चयबोधक — यदि, तो, चाहे, जो-जो आदि।
7. स्वरूपवाचक समुच्चयबोधक — अर्थात्, मानो आदि।

इसी प्रकार अर्थ और प्रयोग के आधार पर समुच्चयबोधक शब्द के और विभाजन हो सकते हैं।

''जो शब्द दो वाक्यों, उपवाक्यों या शब्दों को मिलाते हैं उन्हें समुच्चयबोधक शब्द कहते हैं।''

4. अविकारी शब्द—विस्मयादिबोधक

विस्मय का अर्थ है आश्चर्य प्रकट करना। भाषा के माध्यम से हम दुःख, हर्ष आदि भावों को प्रकट करने के लिए कुछ विशेष शब्दों का प्रयोग करते हैं। इन शब्दों का वाक्य के अंत के शब्दों से संबंध नहीं होता। ये वाक्य के आरंभ में आते हैं और एक विशेष भाव प्रकट करते हैं।

ओह! मैं परीक्षा में पास हो गया।

हाय! मेरा दोस्त मर गया।

अच्छा! तुम्हें इतना अभिमान हो गया।

शाबास! इस वर्ष तुमने इनाम जीत लिया।

ओह!, हाय!, अच्छा!, शाबास! — ये सब विस्मयाबोधक शब्द हैं, क्योंकि वाक्य में ये एक विशेष भाव को प्रकट कर रहे हैं। अर्थ के आधार पर ये अनेक प्रकार के होते हैं। जैसे —

1. हर्षबोधक — वाह वाह, शाबास, अहा आदि।
2. शोकबोधक — हाय, आह, हा हा आदि।
3. आश्यर्यबोधक — है, क्या आदि।
4. तिरस्कारबोधक — छिः, हट, धिक् आदि।
5. संबोधनबोधक — अरे, ओ, अजी आदि।

इसी प्रकार प्रयोग और अर्थ के अनुसार और भी भेद हो सकते हैं।

''जिस शब्द का संबंध वाक्य के अन्य किसी शब्द से नहीं होता और जो केवल प्रसन्नता, भय, शोक, दुःख, आश्चर्य आदि भाव प्रकट करता है, उसे विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं।''

अभ्यास

1. 'अव्यय' किसे कहते हैं और ये कितने प्रकार के होते हैं?
2. संबंधबोधक और समुच्चयबोधक शब्दों में क्या अंतर है?
3. नीचे लिखे प्रश्नों के 'हाँ' या 'नहीं' जोड़कर सही उत्तर दो -
   (अ) क्या विकारी और अविकारी शब्द एक समान होते हैं?
   (आ) क्या अविकारी शब्दों का ही दूसरा नाम अव्यय है?
   (इ) क्या विशेषण और संबंधबोधक शब्द समान अर्थ देते हैं?
   (ई) क्या समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक शब्द वाक्य में एक जैसे अर्थ रखते हैं?
   (उ) क्या विस्मयादिबोधक शब्द वाक्य के मध्य में आता है?

4. नीचे लिखे वाक्यों को 'हाँ' या 'नहीं' लगाकर सही करो -
   (अ) संज्ञा शब्द को अव्यय शब्द कहते हैं।
   (आ) अविकारी शब्दों का ही दूसरा नाम अव्यय है।
   (इ) संबंधबोधक शब्द शब्दों या वाक्यों का संबंध जोड़ता है।
   (ई) विस्मयादिबोधक शब्द वाक्य के शब्दों को अलग करता है।
   (उ) अव्यय शब्दों में क्रिया-विशेषण शब्द का विशेष महत्व है।
5. नीचे लिखे अव्यय (अविकारी) शब्दों का वर्गीकरण करो -
   धीरे-धीरे, आगे, अपेक्षा, साथ, क्योंकि, और, लगभग, आजकल, पास, किंतु, हाय, अरे, अथवा, घड़ी-घड़ी।

समास

1. समास

समास का अर्थ है सम्मिलन, अर्थात् दो या उससे अधिक शब्दों का मिल कर एक होना। परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक स्वतंत्र शब्दों को जोड़कर एक शब्द बनाना ही समास है। जिस प्रकार दो वर्णों के मेल से संधि बनती हैं, उसी प्रकार दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से समास बनता है।

उदाहरण

संधि — विद्या + आलय = विद्यालय
आ + आ = आ

समास — राजा का कुमार = राजकुमार
राज + कुमार

इसी प्रकार — सीताराम अच्छा लड़का है।
राजकुमार शिकार खेलने गए हैं।
रसोईघर में मत आओ।
हमें माता-पिता का कहना मानना चहिए।
राम ने दशानन को मारा।

ऊपर के वाक्यों में —
सीताराम = सीता और राम
राजकुमार = राजा और कुमार
रसोईघर = रसोई का घर
माता-पिता = माता और पिता
दशानन = दस आनन (मुख) वाला

इन सामासिक शब्दों का विग्रह करने में अर्थ स्पष्ट हो जाता है। विग्रह का अर्थ है शब्दों को अलग-अलग करना। जब इनको जोड़कर लिखा जाता है तो संबंध बताने वाले विभक्ति चिह्न का लोप हो जाता है। जैसे कि ऊपर के शब्दों में - और का चिह्न लुप्त हो गया। इससे अर्थ में भी विशेषता आ जाती है और विस्तार से बच जाते हैं।

''दो शब्दों का परस्पर संबंध सूचित करने वाले शब्दों या प्रत्ययों का लोप हो जाने पर उन शब्दों के योग को समास कहते हैं।''

2. समास के भेद

पदों की प्रधानता के आधार पर हम समास के छह भेद कर सकते हैं।

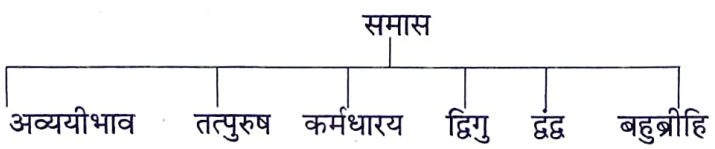

अव्ययीभाव—

प्रतिदिनि घर-घर भीख माँगना ठीक नहीं है।

राम और श्याम दिन भर पास-पास बैठे रहें।

प्रतिदिन, पास-पास, ये पद अव्यय हैं। इसी प्रकार यथाशक्ति, अनजाने, बेशक, हरघड़ी, हाथोंहाथ, तड़ातड़, भी अव्यय शब्द हैं। उपयुक्त सामासिक शब्दों में अव्यय शब्दों की प्रधानता है। ये कभी एक, कभी दो और कभी पुनरुक्ति के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

''जब किसी सामासिक पद में पहला शब्द अव्यय हो तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।''

तत्पुरुष—

धनहीन का रसोईघर फूस का होता है।

उपमंत्री ठाकुरबाड़ी में गए।

मुझे यात्रीगाड़ी में एक नालायक आदमी मिला।

ऊपर के वाक्यों में धनहीन, रसोईघर, उपमंत्री, ठाकुरबाड़ी, यात्रीगाड़ी, नालायक सामासिक पद हैं। इन सामासिक शब्दों का प्रथम पद गौण है, जबकि अंतिम पद के अर्थ की प्रधानता है।

''जिस समास का अंतिम पद का अर्थ प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।''

तत्पुरुष समास वाले शब्दों का विग्रह करते समय इनमें कर्ता और संबोधन कारक की विभक्तियों को छोड़कर अन्य सभी विभक्तियाँ लगती हैं। जैसे -

धनहीन = धन से हीन

ठाकुरबाड़ी = ठाकुर की बाड़ी आदि।

कर्मधारय—

हिमगिरि पर प्रात:काल अच्छा लगता है।

पीतांबर और नीलकमल सुंदर दिखाई देते हैं।

हिमगिरि, प्रात:काल, पीतांबर, नीलकमल इन सामासिक पदों में प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा है। विशेषण + संज्ञा या विशेषण + विशेषण के मिलने से कर्मधारय समास बनता है। इसे समानाधिकरण तत्पुरुष भी कहते हैं, क्योंकि शब्द के दोनों पदों के लिंग, वचन समान होते हैं।

''जिस समास में पहला पद विशेषण और दूसरा पद संज्ञा हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं।''

द्विगु—

पंचवटी सुंदर स्थान है।

मैंने दोपहर को एक रुपये का चॉकलेट खाया।

पंचवटी, दोपहर, एक रुपये - इन सामासिक पदों में से प्रत्येक का प्रथम पद संख्यावाचक विशेषण है और दूसरा पद संज्ञा है। इसी प्रकार — चौपाया, त्रिभुवन, नवरत्न, तिमाही, चतुर्वर्ग, सतसई, त्रिलोक, चौमासा आदि भी द्विगु समास वाले शब्द हैं।

''जिस समास में पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो और दूसरा पद संज्ञा हो, उसे द्विगु समास कहते हैं।''

द्वंद्व—

जिस समास में सभी पदों का अर्थ प्रधान होता है। उसे द्वंद्व समास कहते हैं। जैसे—

तुम माता-पिता की आज्ञा मानो।

हमें देश की तन-मन-धन से सेवा करनी चाहिए।

असम में कंद-मूल-फल अधिक होते हैं।

आपका घर-द्वार कहाँ है?

ऊपर के वाक्यों में माता और पिता शब्द मिलाकर माता-पिता बन गया, परंतु इसमें माता तथा पिता दोनों शब्दों की प्रधानता है। इसी प्रकार कंद-मूल-फल, घर-द्वार भी द्वंद्व समास हैं।

'जिस समास में सभी पद प्रधान हो, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। ''

बहुब्रीहि—

गिरिधारी ! सबकी रक्षा करते हैं।

दशानन महा विद्वान था।

ऊपर के वाक्यों में - गिरिधारी = पहाड़ को धारण करने वाला अर्थात् श्रीकृष्ण, दशानन = दश मुख वाला अर्थात् रावण ये सामासिक शब्द किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु का बोध कराते हैं। ये बहुब्रीहि समास के शब्द हैं। ऐसे ही चंद्रमुखी, सपरिवार, अनाथ, निर्दय, विधवा, कुरूप आदि भी बहुब्रीहि समास हैं।

''जिस समास में कोई भी पद प्रधान न होकर दोनों पदों का संयुक्त रूप हो और पदों का अर्थ न होकर किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु का अर्थ दें, उसे बहुब्रीहि समास कहते हैं।''

टिप्पणी — तत्पुरुष में कोई एक पद प्रधान होता है, द्वंद्व में दोनों या सभी पद प्रधान होते हैं, परंतु बहुब्रीहि में कोई पद प्रधान नहीं होता और दोनों पदों का अर्थ न होकर कोई तीसरा ही अर्थ प्राप्त होता है।

अभ्यास

1. समास किसे कहते हैं ?
2. समास कितने प्रकार के होते हैं ? नाम बताओ।
3. समास और संधि में क्या अंतर हैं।
4. नीचे लिखे शब्दों का सविग्रह समास बताओ—
   प्रतिदिन, घर-घर, रसोईघर, पीतांबर, पंचवटी, माता-पिता, दशानन, लंबोदर।
5. नीचे लिखे वाक्यों के रिक्त स्थानों पर सही सामासिक शब्द भरो—

(अ) रावण को ..... भी कहते हैं।	पंचानन, षड़ानन, चतुरानन, दशानन
(आ) श्रीकृष्ण को .....भी कहते हैं।	हलधर,धनुर्धर,गदाधर, डंबरूधर, गिरिधर।
(इ) हमें स्नान ..... करना चाहिए।	प्रतिपल, दिनभर, धीरे-धीरे , प्रतिदिन।
(ई) रमेन ..... को हाजो जाएगा।	सुबह, प्रतिदिन, आगे-पिछे, दोपहर, शाम।